P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में फैशन का इतिहास : परिधान के विशेष सन्दर्भ में

History of Fashion in India: With Special Reference to Apparel

शालिनी आल्हा
सहायक आचार्य,
गृहविज्ञान विभाग,
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश

आदिकाल से मनुष्य द्वारा अपने शरीर को ढ़कने व सुरक्षित करने के लिए वस्त्र धारण किए जाते रहे हैं। समय के साथ–साथ वस्त्र धारण करने के तरीकों से बदलाव देखा गया है। यह बदलाव न केवल वस्त्रों के क्षेत्र में हुए आविष्कारों के कारण हैं। बल्कि लोगों की वस्त्रों में रूचि ने भी परिधानों में होने वाले बदलाव को आगे बढ़ाया है। समय के साथ बदलने वाला चलन फैशन है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में मानव की रूचियां बढ़ी और इसी के चलते परिधानों में फैशन की शुरूआत हुई। प्रस्तुत आलेख के अन्तर्गत भारतीय समाज के संदर्भ में स्वतन्त्रता पूर्व से स्वातंत्रता के बाद 2000 के दशक तक परिधान के क्षेत्र में फैशन के क्रमिक विकास एवं बदलाव को भिन्न परिपेक्ष्य में देखने और जानने की कोशिश की गई है।

Since ancient times, humans have been wearing clothes to cover and protect their bodies. Changes have been seen in the way we wear clothes over time. These changes are not only due to inventions in the field of textiles. Rather, people's interest in clothes has also lead to the change in the costumes. Fashion is a changing trend over time. As human civilization evolved, Human interest increased in various fields and this lead to the introduction of fashion in apparel. In the context of Indian society, the present article has tried to see and understand the gradual development and change of fashion in the field of apparel from pre-independence to post 2000s in different perspective.

मुख्य शब्द : फैशन, बदलाव, रुझान, परिधान, संस्कृति।
Fashion, Makeover, Trends, Apparel, Culture.

प्रस्तावना

हर काल अपने साथ एक चलन लेकर चलता है जिसे फैशन कहते हैं। यह एक बदलाव है जो हमेशा हमें नये पन का एहसास दिलाता है। यह पुराना नहीं होता बल्कि बदलाव के साथ–साथ इनमें कुछ नया प्रयोग किया जाता है। फैशन मुख्य रूप से किसी भी समय में एक संस्कृति में लोकप्रिय रुझान है। यह रुझान परिधान, जूते, केश सज्जा व अन्य सामग्री में हो सकता है। फैशन गतिशील होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इतिहास अपने आपको दोहराता है और फैशन बहुआयामी क्षेत्र है। प्रस्तुत आलेख का मुख्य उद्देश्य भारत के इतिहास में अलग–अलग दशक में परिधान के संदर्भ में आये बदलावों के बारे में जानना है। इतिहास में हुए फैशन के दोहराव के बारे में जानना।

भारत में फैशन के इतिहास को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है –

1. स्वतन्त्रता पूर्व का फैशन
2. स्वतन्त्रता पश्चात का फैशन

स्वतन्त्रता पूर्व का फैशन

भारत के इतिहास पर नजर डालें तो यहां पर विभिन्न कालों में अलग–अलग राजाओं का शासन रहा है। अतः भारत का फैशन भी आर्य, मुगल तथा अन्य पारम्परिक लोक स्रोतों की देन रहा है।

विभिन्न राजवंशियों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र वर्तमान समय में भी देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए–

(1)

1. भारतीय पुरुषों के द्वारा पहने जाने वाले बिना सिले हुए परिधान जैसे धोती, उत्तरीय (गमछा) व पगड़ी आज भी समाज में वैसे ही पहने जाते हैं। (2)
2. भारतीय महिलाओं द्वारा कमर के नीचे का परिधान साड़ी तथा ऊपर का वस्त्र स्तनपट्टा कहलाता था। ये भी बिना सिले वस्त्र होते थे। विभिन्न भौगोलिक भागों में साड़ी अलग–अलग प्रकार से पहनी जाती थी। यह भारतीय महिलाओं का मुख्य परिधान था। जो वर्तमान समय में भी कुछ बदलावों के साथ पहना जाता था। भारतीय फैशन के इतिहास को हम राजसी संरक्षण का फैशन भी कह सकते हैं।

मुगल साम्राज्य एवं फैशन पर प्रभाव

मुगलशासन काल में परिधान के क्षेत्र में बड़ा बदलाव देखा जाता है। इनके द्वारा ही सिले हुए वस्त्र परिधान के रुप में भारत में पहने जाने लगे। महाराजा(3) अकबर के शासन काल में भारतीय फैशन में बहुत बदलाव हुए, जिनके बारे में इतिहासकार अबुल फजल ने भी लिखा है। उदाहरण के लिए ताकाउचिया/ताकोचिया पुरूषों के द्वारा पहना जाने वाला एक कोट है जो बिना अस्तर का होता है और यह एक ओर से खुला होता है तथा दायीं ओर बाँधा जाता है। मुस्लिम समुदाय द्वारा इसे बायीं ओर बाँधा जाता था। महाराजा अकबर द्वारा बनवाया गया यह परिधान गोल स्कर्ट (घाघरा) के साथ पहना जाता था। इस काल में अकबर के द्वारा विभिन्न परिधानों का नाम भी बदला गया। जैसे जामा (कोट) को सर्बगती (पूरे शरीर को ढ़कने वाला) नाम दिया गया।

18वीं सदी

इस काल खण्ड में फैशन के क्षेत्र में नये परिधानों नहीं आए बल्कि पहले से पहने जा रहे परिधानों में कुछ बदलाव के साथ उन्हें सहेजा गया। जैसे परिधानों में इस्तेमाल वस्त्र के रेशों में बदलाव किया गया।

19वीं सदी

कि इस काल में पुरुषों द्वारा पहना जाने वाला परिधान जामा (कोट), अंगरखा के नाम से जाना जाता था। जो की घर से बाहर पहना जाने वाला मुख्य परिधान बना। इसमें भी बहुत से बदलाव किए गए। जैसे जामा की लम्बाई बढ़ा कर लम्बा किया गया। पूरे परिधान में कमर का भाग कुछ ऊपर किया गया। अंगरखा के साथ पहना जाने वाला नीचे का परिधान, पायजामा को अधिक चौड़ा किया गया ताकि पहनने वाले व्यक्ति को आराम मिल सके।

महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परिधानों में भी बदलाव किये गये। महिलाएं व पुरुषों द्वारा धारण किए जाने वाले परिधान को भी अलग–अलग किया गया। उदाहरण के तौर पर पायजामा मुस्लिम समुदाय में महिला व पुरुषों दोनों के द्वारा पहना जाता था। इस काल में एक बड़ा बदलाव यह आया कि दोनों के परिधान अलग हुए। उदाहरण के लिए हिन्दू महिलाओं द्वारा धारण किया जाने वाला घाघरा, चोली व ओढ़नी मुस्लिम महिलाओं द्वारा भी बड़ी संख्या में पहना जाने लगा।

ब्रिटिश साम्राज्य और फैशन पर प्रभाव

19वीं सदी के आखिर तथा 20वीं सदी की शुरूआत में भारत में ब्रिटिश शासन का आगमन हुआ और इसका प्रभाव भी फैशन पर दिखाई दिया। 20वीं शताब्दी की शुरूआत में भारतीय महाराजाओं तथा नवाबों के परिधानों में यूरोपियन प्रभाव साफ देखा जा सकता है। आर्थिक रूप से सशक्त पुरुषों पर इसका प्रभाव अधिक पड़ा। मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के परिधानो पर इसका प्रभाव नगण्य था। महिलाएं अभी भी परदे में रहती थी और परम्परागत वस्त्र ही पहनती थी। जैसे–जैसे समय बदला शहरी क्षेत्र के पढ़े–लिखे पुरुष पाश्चात्य परिधान जैसे पैंट–शर्ट, जैकेट पहनने लगे।

स्वदेशी आंदोलन और फैशन पर प्रभाव

वर्ष 1920 के दौरान भारत में स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ। जिसका भारतीय परिधानों पर विशेष रुप से असर हुआ। बड़े बदलावों के रुप में खादी व हथकरघा वस्त्र मुख्य परिधान बने। महिलाओं के परिधानों में भी हथकरघा साड़ी महत्त्वपूर्ण स्थान रखने लगी।

द्वितीय विश्व युद्ध और फैशन पर प्रभाव

भारत में परिधान निर्माण के बड़े–बड़े कारखाने स्थापित किए गए। जिनका मुख्य निर्माण कार्य युद्ध के सैनिकों के लिए गणवेश तैयार करना था।

स्वतन्त्रता पश्चात का फैशन

भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात परिधानों में बहुत बदलाव देखे गये। शिक्षा व राजनैतिक बदलाव के साथ वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों का असर लोगों के पहनावे पर भी पड़ा। सामाजिक ढाँचे में बदलाव का प्रभाव भारतीय महिलाओं की स्थिति पर पड़ा। सामाजिक ढाँचे में बदलाव का प्रभाव भारतीय महिलाओं की स्थिति पर पड़ा। महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ। जिससे उन्हें चुनाव की स्वतन्त्रता मिली। इस स्वतन्त्रता का असर उनके परिधानों पर भी देखा गया। जैसे परम्परागत साड़ी या घाघरा के स्थान पर धीरे–धीरे आरामदायक पंजाबी सलवार कमीज का प्रयोग महिलाओं द्वारा किया जाने लगा।

50 के दशक में पुरूषों के परिधानों में सूती कमीज और चुन्नटों वाली पेंट फैशन में आई। साथ ही कुछ लोगों के व्यक्तित्व से प्रभावित फैशन भी इस समय देखा जा सकता है। जैसे नेहरु जैकट फैशन में आई।

60 के दशक से सिनेमा युवा वर्ग के फैशन को प्रभावित करने में मुख्य भूमिका में आया। प्रख्यात सिनेमा कलाकार जो भी पहनते वह फैशन बन जाता। यही नहीं शृंगार प्रसाधन सामग्री तथा केश विन्यास भी सिनेमा कलाकारों की नकल से फैशन बन जाता था।

साठ के दशक को रासायनिक कपड़ों का युग भी कहा जा सकता है। इस समय रासायनिक रेशों से बने

कपड़े बाजार में आए और सबकी पसन्द बनने लगे। नायलोन व पोलिएस्टर की छपाई वाली साड़ियां व अन्य परिधान फैशन में आए। साठ के दशक के आखिर में नायलान की पैंट ने चूड़ीदार पायजामे का स्थान ले लिया था।

इस समय पुरूषों द्वारा मुख्यतः सफेद शर्ट/कमीज पहनी जाती थी। परम्परागत विचारों के चलते पुरूष अपने आपको चमकीले परिधानों से दूर रखते थे। 60 के दशक में डिजाइनर कमीज फैशन में आयी। ये रेड़ीमेड थी और हर रंग में उपलब्ध थी। ये कमीज भारतीय पुरूषों के द्वारा बहुत ही पसन्द की गई।

70 के दशक में लोग ब्राण्ड के नाम पहचानने लगे और परिधानों पर लगे उनके लोगो (Logo) उनका सामाजिक/आर्थिक स्तर माना जाने लगा।

80 के दशक में भी टी–शर्ट (पहनने के लिए तैयार वस्त्र) पुरूषों के परिधानों में अधिक देखी गई। भारत में यह लगभग 1980 में आई और इसके बाद ट्राउजर/पायजामा भी फेशन में आया। 80 के दशक में जीन्स की पेंट पुरुषों द्वारा पहनी गयी। साथ ही सफारी सूट भी पहना जाने लगा।

90 के दशक में पुरूषों की शर्ट में रंगीन प्रिंट देखे जा सकते हैं। 80 के दशक में जहाँ पेंट पूरी तरह से फिट थी, वहीं 90 के दशक में ढ़ीली हो गयी थी।

महिलाओं के लिए ब्यूटी क्वीन प्रेरणा स्रोत थे। सिनेमा भी पहले से बदल गया था और अभी भी सिनेमा के परिधानों को युवा वर्ग फैशन के रुप में पालन कर रहा था।

पुरुष के परिधानों में पूर्णतः पाश्चात्य प्रभाव देखा जा सकता है। ये परिधान न केवल औपचारिक अवसर पर पहने जाते हैं, बल्कि परम्परागत अवसरों पर भी ये परिधान पहने हुए पुरुष वर्ग दिखाई देता है। महिलाओं के परिधानों में भी साड़ी के साथ सिले हुए परिधान देश भर में पहने जाते हैं। ये ना केवल सलवार कमीज हैं बल्कि पाश्चात्य परिधान भी है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भारत के फैशन डिजाइनर तथा विश्व भर के विभिन्न डिजाइनर के द्वारा डिजाइन किए गए परिधान महिलाओं व पुरुषों के द्वारा पहने जा रहे हैं। फैशन उद्योग मुख्य उद्योगों में शामिल है और करोड़ों लोग इस व्यवसाय से जुड़े हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Aha Zindgi Magazine

Anamika, Indian Costumes. Lustre Publication 2008.

Bhatnagar, Parul Traditional. India Costumes and Textiles, Abhishek Publication Edition 2009.

Carl Kohler Dover Fashion & Costumes. A History of costume. Dover Publications Inc. 1963.

Newspaper Rajasthan Patrika

Sandhu, Arti Indian Fashion : Traditional, Innovation, Style, Bloomsbury Academic Publisher 2014.